'पुस्तकायन' में जमी साहित्य की बैठकी

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली: साहित्य अकादमी द्वारा मंडी हाउस स्थित रवींद्र भवन परिसर में आयोजित 'पुस्तकायन' पुस्तक मेले का तीसरा दिन कवयित्रियों और गजलकारों के नाम रहा। सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत नगाड़ा वादन व ओडिसी नृत्य की प्रस्तुतियां हुईं। अन्य प्रकाशकों द्वारा भी कई साहित्यिक कार्यक्रम हुए। रविवार होने से हर आयु के लोग मेले में बड़ी संख्या में पहुंचे। 'अस्मिता' नाम से आयोजित कवयित्री सम्मेलन में प्रख्यात ओडिया लेखिका यशोधारा मिश्र की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इसमें अंजु रंजन (हिंदी), मालविका जोशी (हिंदी), नीलांचली सिंह (हिंदी), सरोजिनी बेसरा (संताली) व ए. साथिया सारदामणि (तमिल) ने अपनी-अपनी भाषाओं में व अनुवाद सहित कविताओं का पाठ किया।

साहित्य अकादमी का साहित्य, संस्कृति व कला का यह उत्सव 15 दिसंबर तक चलेगा। इसमें साहित्य अकादमी के साथ ही 40 अन्य प्रमुख प्रकाशकों की भी पुस्तकें मिल रही हैं। गजल संध्या का मंच ज्ञानप्रकाश विवेक की अध्यक्षता में सजा, जिसमें हरेराम समीप, कमलेश भट्ट कमल, सविता चड्ढा और विज्ञान व्रत ने गजलों से महफिल में ऐसी गर्माहट लाई कि लोग वाह-वाह कहते रहे। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में ज्ञानप्रकाश विवेक ने कहा कि वर्तमान हिंदी गजल में आधुनिकता बोध अपनी सबसे ऊंचाई पर है। उनका एक शेर जो खूब पसंद किया गया वह था 'दस्तकें दर पर बहुत देर तलक दी उसने, काश एक बार नाम मेरा पुकारा होता। विज्ञान व्रत की पंक्तियां थीं 'एक सच

गजल संध्या में माइक पर ज्ञान प्रकाश विवेक, साथ में मंच पर हरेराम समीप, कमलेश भट्ट कमल, सविता चड्ढा और विज्ञान व्रत। (बाएं से दाएं) ● जागरण

है मौत भी, वह सिकंदर है तो है।' हरेराम समीप ने अद्भुत संवेदना से भरी गजल सुनाई। कमलेश भट्ट कमल की पंक्तियां थी 'सलीका जिंदगी जीने का आता ही नहीं तुमको, कि सुख भी हैं कई इन कष्टों की दुनिया में।' सविता चड्ढा की पंक्तियां थीं 'दुनिया लाख बुरी हो लेकिन, हमें यहीं रहना होता है।' सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत आद्या सिंह ने लोक वाद्य नगाड़ा की प्रस्तुति दी और शांभवी महेश ने ओडिसी नृत्य में रामाभिषेक और शिवतांडव प्रस्तुत किया। कल 'विविधता में एकता के माध्यम के रूप में अनुवाद' विषयक परिचर्चा एवं बहुभाषी कविता-पाठ का आयोजन होगा। परिचर्चा की अध्यक्षता हरीश नारंग करेंगे, जिसमें रख़्शंदा जलील एवं रेखा सेठी विचार रखेंगी। बहुभाषी कविता-पाठ की अध्यक्षता प्रख्यात हिंदी कवि आशुतोष अग्निहोत्री करेंगे।